B.A Part - 1

बिहारी का कलापक्ष भी बहुत उत्कृष्ट है। कला-पक्ष का तात्पर्य है अभिव्यक्ति का तंत्र। इसके अन्तर्गत भाषा, शैली, शिल्प, मुहावरे, शब्दविन्यास, छंद है। यह काव्य का बहिरंग पक्ष है। भाव अंतरंग पक्ष होता है।

भाषा की दृष्टि से बिहारी की भाषा ब्रजभाषा है। इस ब्रजभाषा पर बुंदेलखंडी भाषा, संस्कृत, अरबी और फारसी का प्रभूत प्रभाव है। बिहारी की भाषा परिनिष्ठित, प्रौढ़, सशक्त और मनोहारिणी है। भाषा में प्रांजलता और कसाव है। मुक्तक काव्य होने के कारण कसाव (compactness) अनिवार्य था। बिहारी की भाषा में व्याकरणिक शुद्धता मिलती है। बिहारी का भाषाधिकार प्रौढ़ है।

बिहारी ने लगभग सभी अलंकारों का प्रयोग किया है, किन्तु मुख्य रूप से निम्नलिखित अलंकारों का प्रयोग विशेष किया है — असंगति, विरोधाभास, श्लेष, यमक, रूपक, उत्प्रेक्षा, उपमा, रूपकातिशयोक्ति और अन्योक्ति। छंद की दृष्टि से बिहारी ने दोहे का सुगठित और निर्दोष प्रयोग किया है।

काव्योपकरण - प्रयोग में बिहारी ने प्रकृति चित्रण, नखशिख - वर्णन

Scanned with CamScanner

स्थितिचित्रण, नायिकाभेद वर्णन, विरह-वर्णन में ऊहात्मक व्यंजना का प्रयोग किया है।
काव्यस्वरूप की दृष्टि से बिहारीलाल का काव्य मुक्तक काव्य के अंतर्गत है। वक्रोक्तिविधान की दृष्टि से बिहारी की महत्ता असंदिग्ध है।
इसप्रकार बिहारीलाल में भावपक्ष और कलापक्ष का अद्भुत सामंजस्य और सामरस्य है। वे अपने समानधर्मा कवियों की भाँति लक्षण-कवि नहीं, काव्य-कवि हैं।
'सतसई' में शास्त्रीय-परंपरा और शृंगारमुक्तक-परंपरा का अभूतपूर्व समन्वय है।
बिहारीलाल ने व्यंग्य, लाक्षणिक वक्रता, अलंकार, नायिकाभेद, नखशिख वर्णन, षड्ऋतु वर्णन, संयोग-विप्रलंभ-वर्णन, प्रकृतिचित्रण इत्यादि सभी विषयों को स्वतंत्ररूप से स्थान दिया है। किन्तु वे लक्ष्य-लक्षण ग्रंथ लिखने के पचड़े में नहीं पड़े। भले ही उन्हें आचार्य की संज्ञा न दी जाए, किन्तु

Sunday

Scanned with CamScanner

आचार्यत्व की प्रतिभा के लिए जितनी योग्यता अपेक्षित है, वह बिहारी में पूर्णतः विद्यमान थी।

बिहारी अनेक शास्त्रों एवं भाषाओं के विद्वान थे। उन्होंने अपनी बहुज्ञता एवं विविध अनुभूतियों को सरसता के साथ अभिव्यक्त किया है।

डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी ने सतसई के संबंध में लिखा है - 'संसार के शृंगार-साहित्य का भूषण।'

डॉ० भगीरथ मिश्र के शब्दों में - 'बिहारीलाल रीतिकाव्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं।'

विश्वंभर मानव के शब्दों में - 'बिहारी रीतिकालीन प्रणयानुभूति के प्रतिनिधि कवि हैं।'

निष्कर्षतः बिहारीलाल ने कलापक्ष और भावपक्ष दोनों का सामंजस्य सम्यक रूप से किया है। कबीर इत्यादि संत कवियों ने कलापक्ष की उपेक्षा की है। यही हाल रीतिकाल के लक्षण-ग्रंथों का है। इसलिए उनके

Scanned with CamScanner

काव्य को उत्कृष्ट नहीं माना जाता। भाव और कला के सम-न्वय के प्रतिमान हैं तुलसीदास। इस परंपरा को गतिरखने में बिहारी-लाल ही उल्लेख्य हैं।

बिहारीलाल के पदों के अर्थ

1. बिहारीलाल कहते हैं कि हे, राधा मेरे जन्म-मरण के दुखों को दूर करें। आपके शरीर की छाया पड़ते ही श्रीकृष्ण भी (जो स्वयं आनन्द-मूर्ति हैं) आनन्दित हो जाते हैं।

इस दोहे में कवि श्रीराधिका जी को कृष्ण से भी बढ़कर आनन्द-दायिनी शक्ति मानकर निज दुख:-हरण की प्रार्थना करते हैं।

2. सीस मुकुट ... बिहारीलाल जी कृष्ण से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि सिर पर मुकुट, हाथों में मुरली, कमर में कमरधनी, तथा हृदय पर फूलों की माला धारण किए हुए जो आपकी छवि है, वह सदा